RE: SCARCITY OF RICE IN KERALA DUE TO SHORTAGE OF RAILWAY WAGONS

SHRI VAYALAR RAVI (Kerala): Madam, I rise to draw the attention of the Government to a serious problem that Kerala is facing. It is about the scarcity of rice stocks with the PDS in Kerala.

Madam, Kerala is one of the States which have successfully implemented statutory rationing. Every family in Kerala holds a ration card. We have this statutory rationing since 1965. When the southern food zone was removed, an assurance was given by the then Government and the Prime Minister that the needs of Kerala will be met. Now, irrespective of any political party being in power, this system has continued with the help of the Central Government.

Madam, we need 18 lakh tonnes of rice every year. We need 1.5 lakh tonnes of rice every month. Our requirement has now increased to about 1,60,000 tonnes. Today the problem is that rice stocks are not available in Kerala because there are no rail facilities available. That is the main problem. I do not want to blame the FCI. They say that the railways give priority to movement of food items. But our Minister came here yesterday, he met the Members of Parliament, and he said that, unfortunately, least priority is being given by the railways. Madam, I do not want to take much of your time. I only want to say that Kerala has successfully implemented the statutory rationing. We are also trying our level best to control the prices. If there is scarcity of an essential commodity like rice, with the PDS in Kerala, it will automatically increase the prices in the open market. So, one problem is the non-availability of railway rakes. I demand that the Minister of Railways and the Minister of Civil Supplies should jointly look into this problem. FCI should release adequate quantity of rice to Kerala, and a minimum of six railway rakes per day should be reserved for carrying rice to Kerala. Our State must be helped by the Railways in the supply of rice. In fact, I would request that priority should be given to supply of rice to Kerala.

SHRI O. RAJAGOPAL (Kerala): Madam, I associate myself with it.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI KAMLA SINHA): Shri O. Rajagopal is associating himself with it.

SHRI VAYALAR RAVI: Madam, Shri M.A. Baby's name is also there.

RE: PROTECTION OF NEEL GAI

श्री मूलचन्द मीणा (राजस्थान): उपाध्यक्ष महोदया, मैं सरकार का ध्यान एक ऐसे विषय की ओर दिलाना चाहता हूं, जिससे देश के अंदर एक गंभीर मामला सामने आने वाला है। महोदया, देश के सामने कई बार गौ-हत्या, गौ-वध के लिए भारतीय जनता पार्टी के लोग आंदोलन करते रहे हैं और कई बार यहां पर गौ-हत्या के नाम पर कई साधुओं को लाकर इंडिया गेट पर प्रदर्शन कराया गया। कई साधु गोलियों के शिकार बने, लेकिन भारतीय जनता पार्टी के जो लोग हैं उनका असली चेहरा और नकली चेहरा अलग-अलग प्रकार से है। राजस्थान के अंदर भारतीय जनता पार्टी की सरकार है। ...**(व्यवधान)**... वहां की सरकार ने नील गाय को मारने के परमिट जारी कर दिए हैं। और तो और, मैडम, दो साल पहले दिल्ली के अंदर जो अंतर्राष्ट्रीय मेला लगा था उसमें दिल्ली सरकार के मंडप के अंदर गाय के मांस को पैकेट और टिन के पैकेट के अंदर प्रदर्शन के रूप में रखा गया था। भारतीय जनता पार्टी की इन बातों से यह लगता है कि राजनीति के लिए तो गाय की बात करते हैं, लेकिन अर्थ नीति, पैसा कमाने के लिए गाय के मांस की बात करते हैं। तो मैं भारत सरकार से यह निवेदन करना चाहूंगा कि जिन नील गायों को मारने के लिए राजस्थान सरकार ने परमिट जारी करने के आदेश दिए हैं, उन आदेशों को रोका जाए और हजारों गायों की जो हत्या होने वाली है या जो शिकार होने वाली हैं उन्हें बचाया जाए। जो लोग वोट की खातिर हिन्दू धर्म के अंदर गाय की रक्षा की बात करते हैं, वही लोग पैसे के लिए गायों को मरवाना चाहते हैं, उन गायों की हत्या करवाना चाहते हैं।

महोदया, मैं आपके माध्यम से केन्द्र सरकार का ध्यान इस ओर आकर्षित करना चाहता था कि इस ओर वह ध्यान दे और हजारों गायों की होने वाली हत्या को

रोके। भारतीय जनता पार्टी की जो नीतियां हैं, जो उनका मुखौटा है, उनका असली और नकली चेहरा है उसका लोगों के बीच पर्दाफाश किया जाए। भारतीय जनता पार्टी के जो मेरे साथी यहां बैठे हैं, उनसे भी मैं यह निवेदन करना चाहूंगा।

श्री महेश्वर सिंह (हिमाचल प्रदेश): मीणा जी, आप भारतीय जनता पार्टी पर कम बोलिए, आप यह बताइए कि राजस्थान में किसानों की फसल कैसे बचाई जाए नील गाय से। इसका भी आप बताइए। नील गाय और गाय में अंतर है, महोदय। इसको आप समझिए। आप यह बताइए कि फसल कैसे बचाई जाए। आप तो भारतीय जनता पार्टी पर बोले जा रहे हैं।

श्री मूलचन्द मीणा: दोनों में क्या अंतर है? **(व्यवधान)**...

उपसभाध्यक्ष (श्रीमती कमला सिन्हा): आपने आसन की इजाजत ली? बिना इजाजत के आपने भाषण देना शुरू कर दिया।

नागर विमानन मंत्री तथा सूचना और प्रसारण मंत्री (श्री सी० एम० इब्राहीम): नील गाय अभी बी० जे० पी० की मैम्बर नहीं बनी है।

श्री मूलचन्द मीणा: लेकिन मुखौटा अपना साफ करिए, लोगों के सामने ले जाइए कि हमारा चेहरा असली है या नकली है, यह देखिए। हम गायों की रक्षा चाहते हैं या गायों का वध चाहते हैं? मैं केन्द्र सरकार से यही निवेदन करना चाहूंगा कि जो हजारों गायों की हत्या होने वाली है, उसको रोका जाए और हिन्दू धर्म में जो गाय को पवित्र माना गया है उसकी पवित्रता को बनाए रखा जाए। बस, मैं यही कहना चाहता हूं। धन्यवाद।

उपसभाध्यक्ष (श्रीमती कमला सिन्हा): मंत्री जी, जहां तक मेरी जानकारी है, नील गाय एक वन्य प्राणी है और यह प्रोटेक्टेड एनीमल है। तो आपको इस तरफ भी थोड़ा ध्यान देना चाहिए कि किन परिस्थितियों में उनको मारने के लाइसेंस दिए गए? ऐसी कौन सी बात है? इसकी जानकारी हासिल करके उनका प्रोटेक्शन हो। इसकी कार्यवाही आपको करनी चाहिए। श्री सनातन बिसी।

RE: STARVATION DEATHS IN ORISSA — NEED TO SEND A SPECIAL STUDY TEAM TO ORISSA

SHRI SANATAN BISI (Orissa): Madam, thank you for giving me this opportunity. I may mention here that the other day we were seeking clarifications from the Minister of Agriculture regarding the drought situation in Orissa, most particularly in the western parts of Orissa, Bolangir Kalahandi-Sundargarh-Sambalpur. The situation has got worsened. I will be depicting the plight, the misery, the hardships and the sufferings of the people as have been narrated in a local newspaper of that area. The headline of *The Ganaistahar* dated 6.12.96 is so frightening that I am compelled to read it out. The House should know the sufferings of the people, the kind of hardships the people there are facing. They are praying to their presiding diety "We are leaving the village to other areas." They are leaving to other neighbouring States like Bihar and Andhra Pradesh. They say, "We are going away. We will return if we are alive." So pathetic are the circumstances. The other day, we were mentioning to the Agricultural Minister that the public distribution system was not being properly monitored in these areas. Rice is not prvided to them. On that day it was submitted that under the EAS programme, villagers are not getting employment; as a result, they are going away. They are not getting wages. They are unable to purchase any commodity for their day today use and because of that they are starving. Madam, I submit, through you, that such a situation has arisen in Orissa. The Sate Government is always saying that it is not getting money but our Prime Minister, the Agricultural Minister, the Rural Areas Development Minister have said several times that they are providing money, but the State Government is not able to spend that money, that there is poor utilisation, that there is a poor administration in the State Government. I submit that the Agricultural Minister has gone there and he has seen the